सकल संघ की चित्त समाधि व भिक्षु– ाासन का विकास मेरा मनोभाव : आचार्य महाश्रमण

रतनगढ़ : 17 जनवरी 2011

पूरा धर्मसंघ एक संघपुरूश है। साधु, साध्वी, समण, समणी व श्रावक इसके विभिन्न अंग है और आचार्य मश्तिस्क के समान है। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि युवा पीढ़ी ही तेरापंथ का भविश्य है। भविश्य के संदर्भ में तेरापंथ विशय पर चर्चा करते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि संघ पुरूश मजबूत है तो सब मजबूत हैं। तीसरे व अंतिम चरण में वर्धमानता की चर्चा उन्होंने कहा कि आचार्य के रूप में मेरा प्रथम दायित्व है सम्पूर्ण संघ की चित्त समाधि व धर्मसंघ के सभीप्रकल्पों का समुचित विकास से भैक्षव भाासन का विकास मेरा मनोभाव बना रहे। ज्ञान के विकास से भविश्य का विकास करने के लिए हमारी योजनाएं अच्छी हो। इस पर चिन्तन करें और उन योजनाओं पर पुरूशार्थ भी करें तो भविश्य उज्जवल होगा।

राश्ट्रसंत आचार्य महाश्रमण ने बताया के संसार में अनन्त प्राणी हैं। जमीकंद वनस्पतियों के एक सूई के अग्रभाग जितने हिस्से में भी अनेकों जीव है। यह वि व व्यवस्था है, इसे स्वीकार करें। हिंसा का त्याग कर अहिंसा के मार्ग पर चलें।

उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृत और हिन्दी भाशा कमजोर नहीं पड़े ।इन भाशाओं का विकास हो और निरंतर विकास चलता रहना चाहिए। संघ में साहित्य का विकास होगा तो ज्ञान का विकास स्वतः ही हो जाएगा।

सामने बैठे विधायक राजकुमार रिणवां व ि ावभगवान कम्मा आदि को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि राजनीति खराब नहीं है इससे कार्य चलता है पर राजनीति का स्तर ऊंचा रहना चाहिए उसमें मूल्यवत्ता बनी रहनी चाहिए।

इससे पूर्व साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी ने कहा कि संघ का य ास्वी इतिहास उज्जवल रहा है, इस इतिहास को उज्जवलतर बनाये रखना है व भविश्य के लिए उज्जवलतम इतिहास को गढ़ना है। जिस संगठन के पास कल्पना, सपनाव योजन नहीं है वह उस जहाज के समान है जिसका कोई लक्ष्य नहीं है, वह तो भटकेगा ही। उन्होंने परमपुज्य आचार्य प्रवर से निवेदन किया कि आप धर्मसंघ में एक–एक व्यक्ति का दोहन कर व्यक्तियों को तैयार करें, उनका सम्यक नियोजन करें व समय–समय पर धार भी तेज करें। तेरापंथ धर्मसंघ का अतीत महान और गौरव ाली है। भविश्य की नयी संभावनाएं उज्जवल है। संघ में युवा पीढ़ी पुरूशार्थ करने में सहयोग करे। इससे पूर्व मुनि कि ानलाल जी, मुनि विजय कुमार, समणी प्रतिभाप्रज्ञा व साध्वी कल्पलता जी, साध्वी कान्तय ा व नवदीक्षित साध्वियों ने भी अपने विचार धर्म परिशद् में रखे व गीतिकाएं प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

रणजीत दूगड़
संयोजक मीडिया समिति
+91 9831017467
rs_dugar@yahoo.com